द्वपिक्षीय नविश संधयिाँ

प्रलिमि्स के लयि:

द्वपिक्षीय नविश संधयिाँ (BITs), कें द्रीय बजट 2024-25, प्रत्यक्ष वदिशी नविश (FDI)।

मेन्स के लयि:

द्वपिक्षीय नविश संधयिाँ, भारतीय अर्थव्यवस्था के लयि FDI का महत्त्व।

स्रोत:इंडयिन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

अंतरमि **कें द्रीय बजट 2024-25** प्रस्तुत करते हुए, भारतीय वत्ति मंत्री ने कहा कि भारत प्रत्यक्ष वदिशी नविश (Foreign direct investment- FDI) के प्रवाह को बढ़ावा देने के लयि अपने व्यापरकि भागीदारों के साथ **द्वपिक्षीय नविश संधयिों (Bilateral Investment Treaty- BITs)** पर बातचीत करेगा।

- वशिष रूप से वर्ष 2016 में **BIT मॉडल** को अपनाने के बाद से भारत की द्वपिक्षीय संधयिाँ समाप्त हो गई हैं।

द्वपिक्षीय नविश संधयिाँ (BITs) क्या हैं?

- **परचिय:**
  - **BITs दो देशों के बीच एक-दूसरे के क्षेत्रों में वदिशी नजिी नविश** को बढ़ावा देने एवं उसकी **सुरक्षा करने के लयि पारस्परकि समझौते** हैं।
  - 90 के दशक के मध्य से भारत सरकार ने **वदिशी नविशकों एवं नविशों को अनुकूल परस्थितियिों के साथ संधि-आधारति सुरक्षा प्रदान करने के लयि BIT की शुरुआत** की।
- **न्यूनतम गारंटी:**
  - BIT वदिशी नविश व्यवहार के संबंध में **दोनों देशों के बीच न्यूनतम गारंटी स्थापति** करते हैं, जैसे,
    - **राष्ट्रीय व्यवहार** (वदिशी नविशकों के साथ घरेलू कंपनयिों के समान व्यवहार करना)
    - **नष्पिक्ष एवं न्यायसंगत व्यवहार** (अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार)
    - **ज़ब्ती से सुरक्षा** (प्रत्येक देश की अपने क्षेत्र में वदिशी नविश प्राप्त करने की क्षमता को सीमति करना)।
- **BITs के अंतर्गत मध्यस्थता:**
  - BITs सामान्य रूप से नविशकों एवं नविश करने वाले **देश के बीच ववािदों को नपिटाने के लयि एक तंत्र** प्रदान करते हैं।
  - ऐसे ववािदों को नपिटाने के लयि सर्वाधकि चुना जाने वाला तरीका मध्यस्थता है, जहाँ पक्ष न्यायालय में जाने के स्थान पर अपने ववािद का नर्णिय कसिी तटस्थ व्यक्ति (मध्यस्थ) द्वार कराये जाने पर सहमती व्यक्त करते हैं।
- **इतहिास:**
  - भारत द्वारा **पहला BITs, वर्ष 1994 में UK के साथ हस्ताक्षरति** कयिा गया था।
  - **वर्ष 2010** में भारत के खलिाफ दायर **पहली नविशक संधि दावे के नपिटान के साथ BITs संधि ने ध्यान आकर्षति** कयिा।
  - वर्ष 2011 में भारत को **ऑस्ट्रेलयिा-भारत BITs (व्हाइट इंडस्ट्रीज़ बनाम रपिब्लकि ऑफ इंडयिा)** से उत्पन्न ववािद में अपना पहला प्रतकिूल भुगतान करना पड़ा, जहाँ भारत सरकार को इंटरनेशनल चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा 4.1 मलियिन अमरीकी डॉलर का भुगतान करने का आदेश दयिा गया था।
  - वर्ष 2015 तक भारत को 17 ज्ञात BITs दावों का सामना करना पड़ा, जसिमें ब्रटिशि तेल और गैस कंपनी **केयर्न एनर्जी Plc** का दावा भी शामलि था, जसिके परणिामस्वरूप भारत सरकार को 1.2 बलियिन अमेरकिी डॉलर का पुरस्कार मलिा।
  - सरकारी खजाने पर बढ़ रहे बोझ को देखते हुए, सरकार वर्ष 1993, **BIT मॉडल** पर फरि से वचिार करने के लयि ववश हुई। इसके

परिणामस्वरूप वर्ष **2016 मॉडल BIT को अपनाया** गया, जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने संशोधित पाठ के आधार पर शर्तों पर पुनर्विचार करने के अनुरोध के साथ वर्ष **2015 तक निष्पादित 74 संधियों में से 68 को समाप्त** कर दिया।

- वर्ष 2016, BIT मॉडल को अपनाने को विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिये एक सूक्ष्म तथा कैलिब्रेटेड (अंशांकित) दृष्टिकोण के स्थान पर एक तत्काल संरक्षणवादी उपाय के रूप में देखा गया था।

वर्ष 2016 मॉडल BIT के साथ क्या चुनौतियाँ रही हैं?

- **निवेश की संक्षिप्त परिभाषा:**
  - BIT मॉडल द्वारा BIT सुरक्षा के लिये अर्हता प्राप्त करने के लिये आवश्यक निवेश की परिभाषा को सीमित कर दिया। BIT मॉडल इंगित करता है कि **भारत निवेश के लिये एक संकीर्ण 'उद्यम-आधारित' परिभाषा को प्रस्तावित** करता है, जिसके तहत संधि के तहत केवल प्रत्यक्ष निवेश को संरक्षित किया जाता है।
  - इसमें एक नकारात्मक सूची भी शामिल है, जो निवेश की परिभाषा से पोर्टफोलियो निवेश, ऋण-प्रतिभूतियों में ब्याज, अमूर्त अधिकार इत्यादि को अलग करती है।
  - इस प्रकार नई परिभाषा वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के आधुनिक युग में विदेशी निवेश के बढ़ते दायरे को ध्यान में नहीं रखती है।
- **घरेलू उपचार खण्ड की समाप्ति:**
  - BIT मॉडल में अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता कार्यवाही शुरू करने से **पूर्व घरेलू उपचार की समाप्ति को अनिवार्य** करने वाला एक खंड शामिल है।
  - वर्ष 2016, BIT मॉडल में प्रावधान किया गया है कि एक निवेशक को अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता का सहारा लेने से पूर्व स्थानीय व्यवहार का उपयोग करना होगा।
  - यह निश्चित रूप से विदेशी निवेशकों में विश्वास बढ़ाने के लिये बहुत कम है।
- **FDI पर प्रभाव:**
  - अन्य देशों के साथ शर्तों पर पुनः बातचीत करने में आने वाली कठिनाइयों ने भी FDI को आकर्षित करने में चुनौतियों में योगदान दिया है।
  - अप्रैल-सितंबर 2023 में भारत में FDI इक्विटी प्रवाह 24% घटकर 20.48 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
    - कुल FDI- जिसमें इक्विटी प्रवाह, पुनर्निवेश आय तथा अन्य पूंजी शामिल है, अप्रैल-जून 2022 में 38.94 बिलियन अमरीकी डॉलर के मुकाबले समीक्षाधीन अवधि के दौरान 15.5% घटकर 32.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई।
- **मेज़बान राज्य को व्यापक विवेकाधीन शक्तियाँ:**
  - संधि में निवेश के **उचित व्यवहार को सुनिश्चित करने** वाला एक खंड शामिल था, जो **दोनों पक्षों को ऐसे उपायों को लागू करने से रोकता** है जो स्पष्ट रूप से अपमानजनक हैं या उचित प्रक्रिया का उल्लंघन करते हैं।
  - हालाँकि, **"उचित प्रक्रिया" के उल्लंघन के मूल्यांकन का पैमाना** क्या है, यह **परिभाषित नहीं** किया गया है।
  - इसके अतिरिक्त BIT मॉडल में कहा गया है कि यदि मेज़बान राज्य यह निर्णय लेता है कि BIT के तहत कथित उल्लंघन किसी भी समय कार्यान्वयन का विषय है, तो मेज़बान राज्य का निर्णय गैर-न्यायसंगत होगा और साथ ही मध्यस्थ न्यायाधिकरण द्वारा समीक्षा से छूट दी जाएगी।
    - मॉडल BIT मानता है कि एक विदेशी निवेशक को घरेलू न्यायिक व्याख्याओं एवं तंत्रों पर पूर्ण विश्वास होगा।
    - यह संभावित रूप से मेज़बान राज्य को किसी भी विवाद को न्यायाधिकरण के अधिकार क्षेत्र से एकतरफा बाहर करने का व्यापक अधिकार दे सकता है, केवल इस आधार पर कि प्रश्न में आचरण कार्यान्वयन से संबंधित है।

आगे की राह

- विदेशी निवेशकों और घरेलू अर्थव्यवस्था दोनों के हितों को संतुलित करते हुए यह सुनिश्चित करने के लिये कि **वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ संरेखित** हो, भारत अपनी BIT व्यवस्था पर फिर से विचार कर सकता है। इसमें निष्पक्ष एवं न्यायसंगत व्यवहार, सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र का दर्जा एवं मज़बूत विवाद समाधान तंत्र के प्रावधान शामिल हो सकते हैं।
- विवादों के समय पर निपटान की सुविधा के साथ **निवेशक राज्य विवादों में प्रभावी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिये वर्ष 2021 में विदेशी मामलों पर संसदीय स्थायी समिति द्वारा की गई सिफारिशें**, जैसे मध्यस्थता पूर्व परामर्श एवं बातचीत को बढ़ावा देने के साथ लागू करना।
- भारत को निवेशक राज्य विवादों को प्रभावी ढंग से संभालने की अपनी क्षमता बढ़ाने के लिये निवेश मध्यस्थता के क्षेत्र में स्थानीय विशेषज्ञता विकसित करने में निवेश करना चाहिये। इसमें प्रशिक्षण पेशेवरों एवं कानूनी विशेषज्ञों को शामिल किया जा सकता है, साथ ही निवेश मध्यस्थता के लिये विशेष संस्थान भी बनाए जा सकते हैं।
- भारत को BIT के लिये एक प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाना चाहिये जो नियामक संप्रभुता की अनिवार्यता के साथ निवेशक सुरक्षा की आवश्यकता को संतुलित करता है। इसमें निवेशकों के अधिकारों के साथ-साथ सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने वाले प्रावधानों को भी शामिल किया जा सकता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्षों के प्रश्न

प्रश्न: निम्नलिखित पर विचार कीजिये: (2021)

1. विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय
2. कुछ शर्तों के साथ विदेशी संस्थागत निवेश
3. वैश्विक डिपॉज़िटरी रसीदें

4. अनिवासी बाहरी जमा

उपर्युक्त में से किसको प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में शामिल किया जा सकता है?

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 3
(c) केवल 2 और 4
(d) केवल 1 और 4

उत्तर: (a)

भारत का अक्षय ऊर्जा विज़न: IREDA

प्रिलिम्स के लिये:

पेरिस समझौता, भारत का अक्षय ऊर्जा विज़न: IREDA, विश्व बैंक (WB), **जलवायु परिवर्तन**

मेन्स के लिये:

भारत का अक्षय ऊर्जा विज़न: IREDA, विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिये सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप एवं उनकी रूपरेखा तथा कार्यान्वयन से उत्पन्न होने वाले मुद्दे

स्रोत: पी.आई.बी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (IREDA) ने **विश्व बैंक (WB)** द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार को संबोधित किया जिसमें भारत के अक्षय ऊर्जा परिदृश्य और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए जलवायु परिवर्तन से निपटने के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों पर प्रकाश डाला गया।

वेबिनार में IREDA के संबोधन से संबंधित प्रमुख बिंदु क्या हैं?

- **जलवायु लक्ष्यों की पूर्ति हेतु भारी निवेश:**
  - वर्ष 2030 के लिये भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) अथवा पेरिस समझौते के तहत इसकी जलवायु संबंधी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के लिये 30 लाख करोड़ रुपए के निवेश की आवश्यकता होगी।
    - भारत के NDC लक्ष्यों के अनुसार भारत वर्ष 2005 के स्तर से वर्ष 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करने और वर्ष 2030 तक **गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित** ऊर्जा स्रोतों से **विद्युत उत्पादन की लगभग 50% संचयी स्थापित क्षमता** हासिल करने के लिये प्रतिबद्ध है।
  - **सौर ऊर्जा**, इलेक्ट्रोलाइज़र, पवन और बैटरी स्पेस, पावर ट्रांसमिशन, ग्रीन हाइड्रोजन, हाइड्रो पावर तथा अपशिष्ट-से-ऊर्जा क्षेत्रों में विनिर्माण एवं क्षमता विस्तार के लिये निवेश की आवश्यकता है।
- **रूफ टॉप सोलर क्षेत्र का उन्नयन:**
  - IREDA ने वेबिनार में रूफ टॉप सोलर योजना "PM सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना" के महत्त्व पर प्रकाश डाला।
  - उक्त दूरदर्शी परियोजना में 75,000 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया गया है। जिसका लक्ष्य प्रत्येक माह 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान करके 1 करोड़ घरों को सौर ऊर्जा से लैस करना है।
    - यह योजना लोगों को न केवल पर्याप्त लाभ प्रदान करती है अपितु अक्षय ऊर्जा के बारे में उनकी जागरूकता भी बढ़ाती है जो वर्ष 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन और वर्ष 2047 तक ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के भारत के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य में योगदान देती है।
- **ऊर्जा मांग में वृद्धि:**
  - IREDA के अनुसार देश के लिये **सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के कारण** भारत की ऊर्जा मांग में महत्त्वपूर्ण वृद्धि होगी तथा अधिकतम ऊर्जा मांग **की पूर्ति अक्षय/नवीकरणीय स्रोतों के माध्यम से की जाएगी।**
  - ऊर्जा मांग के लगभग 90% की पूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से की जाएगी।
    - नवीकरणीय ऊर्जा के लिये पर्याप्त ऊर्जा भंडारण का प्रयास जारी है किंतु इसकी प्राप्ति तिक थर्मल ऊर्जा का भी विकास किया

जाएगा।

IREDA क्या है?

- भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (IREDA) नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन भारत सरकार का एक मिनी रत्न प्रतिष्ठान है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1987 में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के लिये एक विशेष गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान के रूप में की गई थी।
- IREDA नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से संबंधित परियोजनाओं के वित्तपोषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो वित्तीय संस्थानों/बैंकों को इस क्षेत्र में ऋण प्रदान करने का विश्वास दिलाता है।

अक्षय ऊर्जा से संबंधित सरकारी पहल क्या हैं?

- नवीकरणीय खरीद दायित्व (Renewable Purchase Obligations- RPO)
- **PM-कुसुम योजना**
- **सौर PV विनिर्माण के लिये PLI योजना**
- **नवीकरणीय ऊर्जा के लिये स्वचालित मार्ग के तहत 100% तक FDI की अनुमति**
- **अटल ज्योति योजना**
- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन**
- **वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड (OSOWOG)**
- **राष्ट्रीय सौर मिशन**
- **सूर्यमित्र कौशल विकास कार्यक्रम**
- **प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना**
- **RE परिसंपत्तियों के लिये 'मस्ट रन' स्थिति:**
  - **'मस्ट रन' स्थिति का आशय संबंधित विद्युत संयंत्र को सभी परिस्थितियों में ग्रिड को विद्युत की आपूर्ति कराने से है।**

और पढ़ें...IEA की इलेक्ट्रिसिटी 2024 रिपोर्ट, इंडियन ऑयल मार्केट आउटलुक 2030: IEA

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन के संदर्भ में नीचे दिये गए कथनों पर विचार कीजिये: (2018)

1. भारत प्रकाश- वोल्टीय इकाइयों में प्रयोग में आने वाले सिलिकॉन वेफर्स का दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है।
2. सौर ऊर्जा शुल्क का निर्धारण भारतीय सौर ऊर्जा निगम के द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- सिलिकॉन वेफर्स अर्द्धचालक के पतले स्लाइस होते हैं, जैसे- क्रिस्टलीय सिलिकॉन (c-Si), एकीकृत/इंटीग्रेटेड सर्किट का निर्माण और प्रकाश- वोल्टीय सेल के निर्माण के लिये उपयोग किया जाता है। चीन अब तक सिलिकॉन का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील का स्थान है। भारत सिलिकॉन एवं सिलिकॉन वेफर्स के शीर्ष पाँच उत्पादकों में शामिल नहीं है। अतः कथन 1 सही नहीं है।
- सौर ऊर्जा शुल्क का निर्धारण केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग द्वारा किया जाता है, न कि भारतीय सौर ऊर्जा निगम द्वारा। अतः कथन 2 सही नहीं है।

अत: विकल्प (d) सही उत्तर है।

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में 'नेट मीटरिग' (Net metering) निम्नलिखित में से किसको प्रोत्साहित करने के संदर्भ में देखा जाता है। (2016)

(a) परिवारों/उपभोक्ताओं द्वारा सौर ऊर्जा का उत्पादन और उपयोग
(b) घरों की रसोईघरों में पाइप प्राकृतिक गैस का उपयोग
(c) मोटरगाड़ियों में CNG किट लगवाना
(d) शहरी घरों में पानी के मीटर लगवाना

उत्तर: (a)

?????:

प्रश्न. भारत में सौर ऊर्जा की प्रचुर संभावनाएँ हैं, हालाँकि इसके विकास में क्षेत्रीय भिन्नताएँ हैं। विस्तृत वर्णन कीजिये। (2020)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-analysis/19-02-2024/print